T.D.C - I

Psy - 1st Paper

Date ______
Page ______

चारित्रिक विकृतियाँ - CHARACTOR DISORDER

Nature (स्वरूप) ⇒ प्रत्येक समाज मे कुछ ऐसे लोग होते है जो समान्य समाजिक नियमो आदर्शो और मूल्यो के विपरित या उससे भिन्न आचरण रखते है या करते है। इसलिए इन्हे समायोजन सम्बन्धी कठिनाई होती है। इसका पारस्परिक संबंध ठीक नही रहता, अतएव चारित्रिक आसामान्ता आसामान्य व्यहार की श्रेणि मे आता है। जिसकी मनोवैज्ञानिक व्याख्या दी जा सकती है तथा उन्हे दुर करने के लिए मनोवैज्ञानिक विधियाँ उपयोग मे लाई जा सकती है।

चारित्रिक विकृति के अन्तर्गत आचरण सम्बन्धी अनेक प्रकार की त्रुटियाँ आती है। इसलिए असामान्य व्यहार के इस रूप को चारित्रिक दोष भी कहते है। तथा इन चरित्र दोषो का कारण समाज के दुसरे लोगो की हानि होती है इसलिए ऐसे लोगो को समाज विकारी (Sociopath) भी कहा जाता है। इसके अंतर्गत यौन दुराचार, अपराधी व्यहार, मद्यपानता एवं मद्यपान व्यसन, मादक द्रव्य औषधी व्यसन, इत्यादी प्रमुख विकृतियाँ आती है।

चारित्रिक विकृति व्यक्ति के व्यक्तित्व संम्बन्धी विशेषताओ की द्योतक है जो इसके मानसिक जगत के संघर्षो एवं तनावो के सूचक होते है। अतएव चारित्रिक विकृतियाँ मानसिक विकृति का ही एक रूप है, परंतु मनःस्नायु विकृति मनोविकृति अथवा मानसिक दुर्बलता से यह विकृति भिन्न रूप की हो जाती है।

मनः स्नायु विकृति या मनो विकृति या मानसिक दुर्बलता से पीड़ित रोगियों की ज्ञानात्मक, क्रियात्मक एवं भावात्मक प्रतिक्रियाएँ विकृत हो जाती है। जिसके फलस्वरूप इन विकृतियों में समन्वय का अभाव पाया जाता है। इनका व्यक्तित्व बिखरा हुआ हो जाता है अतः संगठन का भी अभाव रहता है। परंतु चरित्र दोष से युक्त व्यक्तियों में ये बातें नहीं पायी जाती। ये बिलकुल सामान्य होते है तथा इनका व्यक्तित्व भी सुसंगठित होता है। इनमें आचरण संबंधी नियंत्रण और सदाचार की भावना का अभाव रहता है। इसलिए इन्हें मानसिक संघर्ष और निराशाएँ बरबस चरित्र संबंधि दोष के रूप में प्रकट होते है। अतएव मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से चरित्र विकृतियों द्वारा व्यक्ति के मानसिक संघर्षों तनावों एवं संवेगात्मक अनुभवों के संकेत मिलते है, जिनके बारे में अध्ययन कर व्यक्तित्व की इन विकृतियों को दूर या कम किया जा सकता है।

चारित्रिक विकृतियाँ :-

I. यौन-दुराचार या विकृतियाँ
ii. जुए की बाध्यता
iii. अपराधी व्यवहार
IV. मद्यपान एवं मद्यपानता व्यसन
V. मादक द्रव्य का व्यसन

आदी ये सारी विकृतियाँ चारित्रिक विकृति के अंतर्गत आते है।